मोहयाल मित्र

सातवाँ भव्य मोहयाल रिश्ते–नाते मेला

जनरल मोहयाल सभा की ओर से इस वर्ष हमारा ''सातवें भव्य रिश्ते–नाते मेला'' विशाल स्तर पर ''जी.एम.एस. मुख्यालय'' मोहयाल फाउंडेशन ए–9, कुतुब इंस्टीट्यूशनल एरिया, यू. एस.ओ रोड नई दिल्ली में आयोजित किया गया था। देश के कोने–कोने से युवक–युवतियों, उनके माता–पिता, अभिभावक रिश्ते कराने के लिए पहुँचे थे। मोहयाल परिवार की सबसे बड़ी समस्या रिश्ते–नाते की है। हमारे बच्चों की शादियाँ मुख्यतया सातों जातियों में ही होती हैं। इसी कारण हमारी सीमाएँ सीमित हो जाती हैं और अपनी पहचान बनाने के लिए ये आवश्यक भी है कि हम मोहयालों में ही रिश्ते करें। जनरल मोहयाल सभा की पूरी बिरादरी ने भरपूर प्रशंसा की है। अनुमान से भी अधिक मोहयालों के पहुँचने से यह अनुभव हुआ कि हमारी बिरादरी को ऐसे मेलों की कितनी जरूरत है।

मेले में विवाह योग्य युवक–युवतियों की सूची अलग–अलग काउंटरों पर उपलब्ध करवाई जा रही थी। नये रजिस्ट्रेशन भी अलग–अलग काउंटरों पर हो रहे थे। स्वयं सेवी काउंटरों पर मांगलिक, अमांगलिक सूचीयाँ देने में सेवारत थे। युवक–युवतियों और उनके माता–पिता एवम् अभिभावकों के बैठने की सुन्दर व्यवस्था की गई थी। स्थान पर रिश्ते–नातें मिलन मेले की कार्यविधि एवम् सुखियाँ लिखी थी। जीएमएस की उपलब्धियां भी स्क्रीन पर दिखाई जा रही थी। सारा पण्डाल दुल्हन की तरह फूलों से सजाया गया था।

हमारे प्रधान मोहयाल रत्न रायज़ादा बी.डी बाली जी ने सर्वप्रथम ध्वजारोहण किया एवम् संयोजिका श्रीमती कृष्णलता छिब्बर जी ने मोहयाल प्रार्थना पढ़ी। आपने मंच से प्रधान मोहयाल रत्न रायज़ादा श्री बी.डी. बाली जी से अनुरोध किया कि आपको सुशील कुमार छिब्बर जी मंच पर लाऐं। आदरणीय ले. जनरल जी.एल. बक्शी जी को श्री रमेश दत्ता जी मंच पर लायें। माननीय श्री पी.के. दत्ता जी को श्री राजीव छिब्बर मंच पर लाऐं। हमारे भूतपूर्व सेक्रेटरी जनरल श्री डी.वी. मोहन जी को श्रीमती नीलिमा दत्ता सम्मान के साथ मंच पर लायें। तत्पश्चात् मोहयाल रत्न रायज़ादा बी.डी. बाली जी एवं मंच पर उपस्थित सभी गणमान्यों ने द्वीप प्रज्वलित किया।

संयोजिका ने मंच से मेले की गतिविधियाँ बताई। जी.एम.एस ने प्रथम बार विशाल भव्य रिश्ते–नातें मेला 9 अप्रैल 2006 में किया था। दूसरा भव्य रिश्ते–नातें मेला 9 दिसंबर 2007, तीसरा रिश्ते–नातें मेला 14 दिसंबर 2008, चतुर्थ भव्य रिश्ते–नातें मेला 13 दिसंबर 2009, पाचवाँ भव्य रिश्ते–नातें मेला 27 फरवरी 2011, छठा भव्य रिश्ते–नातें मेला 31 मार्च 2013 मोहयाल सभा खन्ना में आयोजित किया था। जनरल मोहयाल सभा के सहयोग से पंजाब, हरियाणा, हिमाचल, दिल्ली को एक साथ एकत्र कर रिश्ते–नातें मेला आयोजित किया गया था। माननीय श्री विनोद दत्ता जी एवम् उनके सहयोजक के प्रयास से हमें यहाँ भी काफी सफलता प्राप्त हुई। जिसका सारा श्रेय हमारे प्रधान मोहयाल रत्न रायज़ादा बी.डी. बाली जी एवं हमारे सभी कार्यकर्त्ताओं को जाता है।

मंच संचालिका ने सर्वप्रथम रायज़ादा बी.डी. बाली जी से मेला प्रारम्भ करने की अनुमति माँगी एवम् उनसे अनुरोध किया कि वह दिशा–निर्देश, आशीर्वाद प्रदान करें। प्रधान मोहयाल रत्न रायज़ादा बी.डी. बाली जी ने सारे देश से आए सभाओं के प्रधान, सचिव, माता–पिता, अभिभावकों और बच्चों का स्वागत करते हुए, भव्य रिश्ते–नाते मेले की सफलता पर प्रकाश डाला एवम् बताया कि इस वर्ष तक 500 रिश्तें ऐसे मेले से हुए हैं। आने वाले वर्ष 2016 में मेलों को अधिकतम सफलता मिले यही मेरा आशीर्वाद है। आप मेले में स्वयं युवक–युवतियों के माता–पिता, अभिभावकों से मिल रहे थे। संयोजिका श्रीमती कृष्णलता छिब्बर मंच से माइक पर लगातार घोषणाएँ कर रही थी। उनके साथ श्री सुशील कुमार छिब्बर जी भी माइक पर घोषणाएँ कर रहे थे। मंच से श्रीमती नीलिमा दत्ता मेहता जी घोषणाओं में साथ दे रही थी। श्रीमती नीरू दत्ता अभिभावकों युवक–युवतियों को पत्री मिलान एवम् आपस में बातचीत कराने में पूर्ण सहयोग कर रही थी। मंच पर तीन अभिभावकों ने सूचित किया कि उनकी बातचीत कराने में पूर्ण सहयोग कर रही थी। मंच पर तीन अभिभावकों ने सूचित किया कि

For courses in MERIT, visit: http://www.meritlogics.com

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

उनकी बातचीत सही दिशा में चल रही हैं। पूर्णतया बातचीत की पक्की खबर वे जी.एम.एस को अति शीघ्र सूचित करेंगें। श्रीमती प्रीति छिब्बर और श्री तनुज मेहता का शुभ विवाह रिश्ते–नातें द्वारा हुआ था। वे अपने माता–पिता के साथ आए हुए थे। आपको मंच पर आमंत्रित किया एवं मोहयाल रत्न रायज़ादा बी.डी. बाली जी ने आशीर्वाद दिया। इस वर्ष लगभग 172 बायो–डाटा आए थे। मंच से 100 बच्चों के नये बायो–डाटा की घोषणाएँ हुई थी। पंडित जी ने 250 पत्री मिलान किया एवं 300 बच्चों की पत्री मिलान कंप्यूटर द्वारा हुई थी। सारे देश के कोने–कोने से माता–पिता अभिभावक, बच्चें आए हुए थे। जैसेः अंबाला, अजमेर, लखनऊ, खंडवा, जम्मू, यमुनानगर, साहरनपुर, कानपुर, मंडी, पॉन्टा साहिब हिमाचल प्रदेश, देहरादून, फरीदाबाद, करनाल, मुम्बई, कोटा राजस्थान, आगरा, गुजरात, इलाहबाद, बैंगलोर, नौएडा, शाहदरा दिल्ली, मोदी नगर, गाजियाबाद, मेरठ, यू.एस.ए, सउदी अरब, हॉलैंड आदि। महरौली सभा से श्रीमती चन्द्र मेहता, श्रीमती सुनिता छिब्बर, श्रीमती उषा बाली, श्रीमती संगीता, श्री राजीव छिब्बर, द्वारका सभा से श्री विमलसेन छिब्बर, श्रीमती स्वर्णलता छिब्बर, फरीदाबाद सभा से श्री मिथलेश दत्ता, श्री बलराम दत्ता, वेस्ट ज़ोन सभा से श्री के.जी. मोहन, श्री शेखर छिब्बर श्री हरिओम मेहता, श्रीमती मंजु दत्ता, श्रीमती सुनीता मेहता, कीर्तिनगर से श्रीमती कुसुम मेहता, अंबाला से श्रीमती नीरू दत्ता सभी स्वयं सेवी सेवारत थे। जी.एम.एस कार्यालय एवम् मैरिट के सभी कार्यकर्त्ताओं ने बड़ी लगन से अपने कार्य में सक्रिय होकर मेले को सफल बनाया।

अन्त में सबकी यही प्रतिक्रिया थी कि जी.एम.स यह बहुत अच्छा कार्य कर रही है। इस तरह का आयोजन वर्ष में एक बार जरूर होना चाहिए। जनरल मोहयाल सभा की ओर से सभी माता–पिता अभिभावकों युवक–युवतियों को सुबह का नाश्ता और स्वादिष्ट लंच भी दिया गया था। जिसका सबने, बहुत आनन्द उठाया था। सभी आए हुए अभिभावकों, माता–पिता ने यह अश्वासन दिया कि भविष्य में अपने बच्चों के रिश्तें हो जाने पर जी.एम.एस को अवश्य सूचना देंगें।

जय मोहयाल, जय मोहयाल, जय मोहयाल

श्रीमती कृष्णलता छिब्बर, *संयोजिका रिश्ते–नातें, जीएमएस*
मो. 9968667740

मोहयाल मित्र में रचनाएँ भेजने के पश्चात् प्रकाशन के लिए दो माह तक प्रतिक्षा करें। इसके पश्चात् ही कार्यालय से संपर्क करें। कृपया समस्त रचनाएँ-रिपोर्ट साफ-साफ लिखें जिन्हें पढ़ा जा सके। पोस्ट कार्ड या छोटे-छोटे कागज के टुकड़ों पर लिखकर रचनाएँ न भेजें। ई-मेल से भेजी रचनाएँ और रिपोर्ट साफ-साफ लिख कर भेजें। नहीं तो छप नहीं पाएगी।

बेटी

कहते हैं कि संतान माता–पिता को इस संसार में एक नया नाम एक नई पहचान देती है। पर ऐसा क्यों बेटा हो तो चारों ओर महौल ही बदल जाता है और बेटी होने पर वो खुशी कहीं दब सी जाती है। कभी–कभार तो उसे इस दुनिया की खुबसुरती देखने से पहले ही मार दिया जाता है और जन्म दिया भी जाता है, तो उसे एक श्रेणी में बाँध दिया जाता है, क्योंकि हमारी सोच लड़की एक बोझ तक आकर ही रूक जाती है, या फिर वो परायी है, पर एक लड़की तो यह नहीं सोचती जब वो शादी करके जाती है अपने मायके से कि अब कोई दुःख या तकलीफ में मेरे मायके में होगा, तो उनकी तकलीफ में साथ नहीं दे सकती, क्योंकि वो पराये है या फिर शादी करके जाती है, अपने ससुराल तो नहीं कहती कि कैसे अपनाऊ इन्हें क्योंकि यह सभी मेरे लिए अनजान है, पराये है।

हम सब के लिए कितना मुश्किल है एक लड़की को जन्म देकर उसे उसको पैरों पर खड़ा करके एक नयी पहचान देना और वही दूसरी ओर देखे तो एक लड़की के लिए कितना आसान है न ससुराल और मायके के बीच सहसा खड़े रहना। एक बेटी, पत्नी, बहू के ही नहीं ब्लकि अनेक किरदार कितनी बखूबी से निभाती आ रही है, पर क्यों हम यह कहते कि लड़की के जन्म लेते ही माँ–बाप के कंधे झुक जाते हैं। जिस धरती पर खड़े होकर हम बोलने की हिम्मत कर पाते है तो भी माँ कहलाती है और नारी रूप है जो अपना छाती को चीर कर हम तक अनाज पहुँचाती है। वह तो हमें कभी नहीं कहती तुम सब मुझ पर बोझ हो। तो हम उसी के रूप की अवर्हलना क्यों करते हैं।

बेटी कभी बोझ नहीं होती यह बात हमें समझनी होगी और समझानी भी। ईश्वर ने जीवन को जन्म देने की शक्ति भी एक स्त्री को दी है। वह अपने आप को एक मुकाम दे सकती हैं यही नहीं वह ऐसा औहदा पा सकती है कि उसके परिवार को उस पर गर्व हो। बेटी उस बगिया के फूल की तरह है, जिसके माली आप हैं और जिसकी वजह से आपके बाग की रौनक बनी हुई है। उसे बोझ मत बोलिए और न ही बोलने दीजिए, उसे इस काबिल बनाइए कि वह अपने साथ–साथ अपनो का बोझ उठाने के काबिल बने। यही नहीं उसे इतना सक्षम बनाए कि उसे अपनी खुशियों व सुखों के लिए किसी के आगे हाथ न फैलाने पड़, और न ही किसी का इंतजार। उसे सबकी नहीं ब्लकि सबको उसकी जरूरत हो। मैं आज सिर्फ इतना ही कहूँगी कि ईश्वर ने जीने का हक, सिर उठाकर जीने का हक सबको दिया। और ईश्वर की इस कृपा को हमें छीनने का कोई हक नहीं। ब्लकि इस जीवन को उसका सही हक देकर हम अपने और ईश्वर के ओर नजदीक आ जाते हैं।

*–**प्रिया बाली** (मो.) 9873992990*

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

मैहता शिवकुमार भीमवाल जी का 97वाँ जन्मदिन

मैहता शिवकुमार भीमवाल जी का जन्म दिनांक 25.01.1919 को स्व. श्री नरनारायण भीमवाल जी एवं स्व. श्रीमती लाजवंती भीमवाल जी के घर तहसील चकवाल जिला जेहलम (पाक) में हुआ। मेहता शिवकुमार के नाना जी स्व. श्री इशर दास जी एवं नानी जी स्व. श्रीमती लक्ष्मी देवी मेहता लव परिवार से थे जोकि रुपवाल तब चकवाल जिला जेहलम (पाक) के निवासी थे।

मैहता शिवकुमार भीमवाल जी ने 1936 में मैट्रिक की परीक्षा पंजाब यूनिर्विसिटी लाहौर से बहुत ही अच्छे अंक लाकर प्रथम श्रेणी में पास की तथा ये एम.बी हाईस्कूल अबोहर जिला फिरोजपुर (पंजाब) के विद्यार्थी थे। उन्होंने 1940 में डीएवी कॉलेज लाहौर से विद्यावाचस्पति की परीक्षा बहुत ही अच्छे अंक लेकर उत्तीर्ण की। उन्होंने 1942 से 1947 तक मिलट्री में नौकरी की। तथा इन्होंने दूसरे विश्व युद्ध में भी भाग लिया।

इनकी शादी स्व. श्री संतराम दत्ता जी एवम् स्व. श्रीमती सावित्री दत्ता जी की सुपुत्री कुमारी पुष्पा देवी दत्ता जी से 1947 में हुई। पिछले कई वर्षों से अपने गाँव सिरदारपुरा जीवन जिला श्री गंगानगर (राजस्थान) में अपनी जमीन पर खेती–बाड़ी करवाते हैं। तथा साथ में आर्युवैद की दवाईयों से मरीजों का इलाज करते हैं।

आज भी ये पूरी तरह स्वस्थ हैं। तथा मोहयाल सभा अबोहर के चीफ पैट्रन है। भीमवाल परिवार के सभी सदस्यों एवं रिश्तेदारों ने उनकी लंबी आयु की प्रार्थना की। इनके जन्मदिन पर इनके सुपुत्रों एवं पोतों ने गाँव की गऊशाला को एक गऊ भेंट की तथा एक हजार रुपए का चारा भेंट किया। तथा जीएमएस के एजूकेशन फंड के लिए 500 रुपए भेंट किए।

मैहता विश्वामित्र भीमवाल *(छोटा भाई), प्रधान मो.स. अबोहर (पंजाब) मो. 9780160085*

गौरव बाली और तनवी बाली का विवाह

गौरव बाली और तनवी बाली पुत्री अश्वनी कुमार दत्ता की सगाई 4.02.2016 को होटल राज कॉन्टीनेंनटल कोर्ट रोड अमृतसर पंजाब में बड़ी धूमधाम से हुई और 5.02.2016 को एसपी रीसॉट अटारी रोड, अमृतसर, पंजाब में शादी हुई।

श्री अशोक कुमार बाली पुत्र स्व. श्री केदारनाथ बाली की तरफ से 8.02.2016 को फलोरा फार्म चंदनहोला, महरौली में रिसेप्सन पार्टी की गई। दोनों परिवारों के रिश्तेदार, दोस्त, मोहयाल सदस्यों के साथ बड़ी संख्या में पार्टी का आनन्द लिया। जिसमें लड़की के परिवार से पिता अश्वनी कुमार दत्ता, माता आशा दत्ता, भाई रमण दत्ता, विशाल दत्ता, बहन रविना भास्कर, पूत्र कर्ण शामिल हुए और लड़के के परिवार से पिता अशोक कुमार बाली, माता ममता बाली, भाई सौरव बाली, बहन पूनम बक्शी, प्रियंका वेद शामिल हुए।

चाचे, ताये, ताई, बुआ, भतीजों ने पार्टी इन्जाय किया। खूब भंगड़े नाचे। इस खुशी में 501 रुपए जीएमएस को दान किए।

अशोक कुमार बाली, *वार्ड नं.6, महरौली, नई दिल्ली*

वार्षिक मिलन–दत्ता परिवार

मोहयाल सभा गुरदासपुर की ओर से 12 फरवरी 2016 (बसंत पंचमी) के दिन दत्ता परिवार के जेठेरे बाबा ठक्कर जी महाराज की समाधि पर दत्ता परिवारों का वार्षिक मिलन हुआ इस बार जीएमएस के उपप्रधान श्री पी.के दत्ता जोकि मोहयाल मित्र के मुख्य संपादक भी हैं विशेष तौर पर बाबा जी का आशीर्वाद लेने तथा दत्ता परिवारों से मिलने पहुँचे।

हर साल की तरह इस बार बड़ी गिनती में पंजाब, हरियाणा, जम्मू से आए दत्ता परिवारों ने बाबा जी की समाधि पर पूजा अर्चना की। दोपहर 12 बजे रामायण का भोग डाला गया आरती के बाद, मोहयाल प्रार्थना की गई प्रसाद बड़ो की कढ़ाई दत्ता परिवारों को दी गई। सुबह से शाम तक दत्ता परिवारों का आना जारी रहा, मंदिर परिसर में नाश्ता और दोपहर में विशाल लंगर अमर पैलस में था।

मोहयाल सभा गुरदासपुर के प्रधान मंजीत सिंह दत्ता, सचिव सुरिन्द्र दत्ता एवम् उनकी पूरी टीम बधाई की पात्र है जिन्होंने इस समारोह का संचालन बड़े अच्छे ढंग से किया।

जलंधर से वी.एन. दत्ता, सुनील दत्ता, सुभाष दत्ता, सुनील दत्ता (के.सी) अशोक दत्ता, लुधियाना से शाम सुन्दर दत्ता, अमृतसर से ए.के. दत्ता ने मोहयालजनों से वार्तालाप किया, उसके आधार पर हमारा सुझाव है अलग–अलग जातियों के जेठेरों के वार्षिक मिलन पर जनरल मोहयाल सभा द्वारा किए जा रहे कार्यों की जानकारी जी.एम.एस के प्रतिनिधियों द्वारा प्रदान की जाए तथा मोहयाल मित्र (मासिक पत्रिका) के वार्षिक तथा आजीवन सदस्य बनाए जाएँ। रिश्ते–नातों संबंधी समस्यों के समाधान हेतु वैवाहिक योग्य बच्चों के विवरण एकत्र किए जाएँ उन विवरणों को मोहयाल मित्र में प्रकाशित किया जाएं।–***अशोक दत्ता,*** *सचिव, मो.स. जलंधर शहर,*

For courses in MERIT, visit: http://www.meritlogics.com

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

मोहयाल सभाओं की गतिविधियाँ

फरीदाबाद

मोहयाल सभा फरीदाबाद की मासिक बैठक 6 मार्च 2016 को श्री रमेश दत्ता जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई, जिसमें लगभग 31 मोहयाल भाई–बहन उपस्थित हुए। मोहयाल प्रार्थना के साथ सभा प्रारंभ की गई।

शोकः मोहयाल रत्न श्री एस.के. छिब्बर जी (आई.ए.एस), जिनका निधन 24 फरवरी 2016 को नई दिल्ली में हुआ। श्री प्रमोद मेहता जी के पिताजी स्व. श्री पी.एल. मेहता, जिनकी क्रिया 02 मार्च 2016 को ग्रीन वैली, फरीदाबाद में हुई, के लिए दो मिनट का मौन धारण किया गया व दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए प्रभु से प्रार्थना की गई।

रायज़ादा के.एस. बाली जी ने पिछले माह की रिपोर्ट पढ़कर सुनाई। उन्होंने सूचित किया कि 20 मार्च को नई दिल्ली में 'रिश्ते–नाते मिलन' का आयोजन 'जनरल मोहयाल सभा' के सहयोग से हो रहा है। विवाह योग्य बच्चों के माता–पिता, इस मिलन में शामिल होकर अपने बच्चों के लिए अच्छे जीवन साथी का चयन कर सकते हैं।

श्री ओ.पी. मोहन जी ने फरीदाबाद की मोहयाल बिरादरी की नई डायरेक्ट्री प्रकाशित करवाने की सलाह दी। प्रधान श्री रमेश दत्ता जी ने इस सलाह को मानते हुए सभी जोनल सेक्रेट्रीरियों को अपने–अपने ज़ोन के मोहयाल परिवारों की सही जानकारी एकत्रित करने का आग्रह किया। उन्होंने सभी उपस्थितजनों को भी इस कार्य में अपने सहयोग देने को कहा, जिससे नई डायरेक्टरी अति शीघ्र प्रकाशित करवाई जा सके।

श्री राजेन्द्र मेहता जी ने इस माह योग की जानकारी देने के लिए कपालभारती, प्राणायाम को चुना। उन्होंने इसको करने का सही तरीका व इसके लाभों पर चर्चा की।

श्री रमेश दत्ता जी ने श्री नागेन्द्र दत्ता जी व श्रीमती निशा दत्ता के पोते राघव दत्ता (जन्मदिन 18 मार्च) व पौती नित्या दत्ता (जन्मदिन 1 अप्रैल) के जन्मदिन के उपलक्ष्य पर बधाई दी व सभी को अवगत करवाया कि आज के भोजन की व्यवस्था श्री नागेन्द्र दत्ता जी की ओर से करवाई गई है। सभी ने बच्चों को मुबारक व शुभकामनाएँ दीं।

इस मौके पर श्रीमती मनु वैद ने भजन प्रस्तुत किया व श्रीमती निशा दत्ता जी ने जन्मदिन का गीत गाकर बच्चों को बधाई दी। राधव दत्ता, नित्या दत्ता व मानस वैद ने भी गीत व कविता प्रस्तुत की।

अंत में, श्री रमेश दत्ता जी ने अपनी व सभा की ओर से दत्ता परिवार को स्वादिष्ट भोजन की व्यवस्था के लिए धन्यवाद किया। अगली मीटिंग 3 अप्रैल को मोहयाल भवन में होगी।

रमेश दत्ता, *प्रधान* — *मो.: 9212557095*

रायज़ादा के.एस. बाली, *महासचिव* — *मो. 9899077041*

अंबाला कैंट

मोहयाल सभा अंबाला कैंट की बैठक 6.03.2016 को प्रधान श्री आई.आर. छिब्बर की अध्यक्षता में निवास स्थान डिप्टी कमां. पी. आर. मेहता 16 सदस्यों ने भाग लिया। मोहयाल प्रार्थना व गायत्री मंत्रोच्चारण बाद पिछली मासिक मीटिंग की कार्यवाही पढ़कर सुनाई गई तथा सर्वसम्मति से अनुमोदन हुआ।

स्वास्थ्य कामनाः श्री एम.के. वैद जो लगभग एक साल से बीमार चल रहे हैं तथा अस्पतालों के चक्र काट रहे हैं उनके शीघ्र ठीक होने की कामना की गई।

गुरदासपुर मोहयाल मेलाः 12 फरवरी 2016 को बसंत पंचमी वाले दिन दत्तों के जेठेरे बाबा ठक्कर की समाधि पर मोहयाल समारोह में श्री एम.एल दत्ता जी ने शामिल होकर अपनी सभा की ओर से 2100 रुपए भेंट किए। इस समारोह में लगभग सभी मोहयालों ने हाज़री देकर इसकी शोभा बढ़ाई। नाश्ते व लंगर का भव्य प्रबंध था। स्त्रियों द्वारा भजन–कीर्तन की अनूठी रौनक थी।

महासचिव ने सदन को बताया कि मोहयाल सभा अंबाला कैंट की विधवाओं के आर्थिक सहायता प्रार्थना पत्र 10.2.2016 को जीएमएस भेज दिए गए हैं। मोहयाल मित्र न मिलने के विषय पर जीएमएस के पत्र को पढ़ कर सुनाया गया। इस पर सदस्यों ने चर्चा की तथा कहा कि अंबाला कैंट में मोहयाल मित्र न मिलने की कोई शिकायत नहीं, नियमत रूप से प्राप्त हो रहा है। सदस्यों ने सुझाव दिया कि कोरियर सेवा की बजाय मोहयाल मित्र की कंपलीमैट्री प्रतियाँ हर सभा को एक की बजाय दो भेज दी जाए, एक प्रधान व दूसरी सभा ऑफिस के लिए। जैसा कि कुछ वर्ष पहले चलता आ रहा था। मोहयाल मित्र न पाने वाले सदस्य की आपूर्ति लोकल सभा द्वारा हो जाएगी। वैसे भी जब कभी ऐसी बात नोटिस में आती है तो जीएमएस में उपस्थित आफिस वालों से संपर्क करने से शीघ्र समाधान हो जाता है।

निम्न प्रतिभाशाली विद्यार्थी जो 10.01.2016 को मोहयाल फांउडेशन, नई दिल्ली में सम्मान पा चुके है उन्हें लोकल सभा ने गिफ्ट भेंट करके सम्मानित किया। तालियों की गूंज में प्रतिभाशाली बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की तथा माता–पिता, दादा–दादी को ढेर सारी बधाई दी।

(क) पारुल बाली–10वीं कक्षा, (ख) युगान्तर छिब्बर–10वीं कक्षा, (ग) मधुर छिब्बर–12वीं कक्षा।

इस बार होली पर्व 20.03.2016 को पटेल पार्क में मनाया जाना तय हुआ, जिसकी जिम्मेदारी धर्मेन्दर वैद तथा एम.एल. दत्ता जी को दी गई।

धनराशिः श्री आई.आर. छिब्बर 500 रुपए डिप्टी कमां. पी.आर मेहता 500 रुपए, श्री एम.एल दत्ता 200 रु., श्री धर्मेन्द्र वैद 200 रु., श्री धर्मवीर बाली 400 रुपए लोकल सभा को भेंट किए, श्री धर्मवीर बाली जी ने 100 रु. जीएमएस विधवा फंड को भेंट किए। अगली

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

मासिक बैठक श्री आई.आर छिब्बर जी ने अपने निवास स्थान पर करने का निर्णय लिया। जय मोहयाल के नारों के साथ मेज़वान श्री पी.आर. मेहता का धन्यवाद करते हुए मीटिंग समाप्त की।

आई.आर. छिब्बर, *प्रधान* ***एचएफओ एम.एल. दत्ता,*** *महासचिव*
मो.: 9416464488 *मो. 9896102843*

अबोहर (पंजाब)

मोहयाल सभा अबोहर (पंजाब) की मासिक बैठक 18 जनवरी 2016 को मैहता विश्वामित्र भीमवाल जी के निवास स्थान पर आयोजित हुई। सभा की अध्यक्षता प्रधान मेहता विश्वामित्र भीमवाल जी ने की। सबसे पहले मोहयाल प्रार्थना की गई, फिर तीन बार गायत्री मंत्र का उच्चारण किया गया। इसके बाद पानीपत से पधारे श्री ऋत मोहन जी सदस्य जीएमएस क अबोहर आने पर मोहयाल सभा के सदस्यों ने गर्म जोशी से स्वागत किया। श्री ऋत मोहन जी ने अबोहर मो.स. को जीएमएस की नई टीम बनाने के लिए धन्यवाद किया। मैहता विनोद कुमार भीमवाल एडवोकेट ने श्री ऋत मोहन जी को उपहार भेंट किया।

सभी सदस्यों ने श्री रविकान्त भीमवाल एलआईसी डैप्लपमैंट आफिसर एवम् श्रीमती रेणू भीमवाल जी की सुपुत्री कुमारी स्मृति के विवाह होने पर बधाई दी, साथ ही मैहता विनोद कुमार भीमवाल जी एडवोकेट एवं श्रीमती गुलशन भीमवाल की सुपुत्री काजल का विवाह होने पर पूरे भीमवाल परिवार को बधाई दी।

सदस्यों ने नया वर्ष पूरी बिरादरी के लिए अच्छा रहने की कामना की। अंत में शांति पाठ के साथ सभा समाप्त हुई।

■ सभा की मासिक बैठक 3 फरवरी 2016 को मैहता विनोद कुमार भीमवाल एडवोकेट के निवास स्थान पर आयोजित हुई। मोहयाल प्रार्थना व गायत्री वंदना के पश्चात सभी मो.स. अबोहर के चीफ पैट्रन मेहता शिवकुमार भीमवाल जी को उनके 97वें जन्मदिन जोकि 25.01.2016 को था बहुत–बहुत बधाई दी तथा उनके स्वास्थ्य रहने की कामना की तथा सदस्यों को बताया कि भीमवाल परिवार के कुछ सदस्य 25.01.16 को उनके जन्मदिन पर उनके गाँव सिरदारपुरा जीवन उनका जन्मदिन मनाने और उनसे अशीर्वाद लिया। कुछ सदस्यों ने मोहयाल मित्र न मिलने पर जीएमएस को पत्र भेजने को कहा। इस पर सभी सदस्यों ने समर्थन किया।

मैहता कृष्ण कुमार भीमवाल जी ने भीमवाल परिवार के बच्चों व मो. स. अबोहर के सभी सदस्यों के बच्चों को आगे आने वाली परीक्षाओं में अच्छे अंक लेने के लिए कठिन परिश्रम करने को कहा।

अंत में शांति पाठ के साथ सभा का समापन हुआ। सभी ने जलपान के लिए भीमवाल परिवार को धन्यवाद दिया।

मैहता विश्वामित्र भीमवाल, *प्रधान मो. 9780160085*

सहारनपुर

मोहयाल सभा सहारनपुर की जनवरी माह की मासिक बैठक 31 जनवरी को मिशन कंपाउण्ड निकट पी.एन.बी स्थित स. इन्दर सिंह दत्ता के निवास पर सम्पन्न हुई, जिसमें शीतलहर के बावजुद 16 सदस्यों ने उत्साहपूर्वक उपस्थिति दर्ज करायी। अनिल बक्शी 'भोली' की अध्यक्षता व महासचिव रवि बक्शी के संचालन में गायत्री मंत्र के साथ सभा प्रारम्भ हुई। सभा के वरिष्ठ सदस्य गुरदीप दत्ता के जन्मदिवस (27 जनवरी) की सभी सदस्यों ने तालियों के गूँज में बधाई दी सभी ने उनके उज्ज्वल भविष्य व दीर्घायु की कामना की। महासचिव ने पिछले माह की कार्यवाही पढ़कर सुनाई जिसे सर्वसम्मति से अनुमोदन किया। प्रधान अनिल भोली ने नववर्ष की बधाई के साथ सभी से मोहयाल मित्र के वार्षिक शुल्क जमा करने के लिए आग्रह किया, जिससे सभी के घर नियमित रूप से पहुँचता रहे। श्री भोली ने कहा जो 3100 रुपए देकर आजीवन सदस्य बनना चाहता है वो छः माह के अंतर में दो किस्तों में राशि भेज सकता है।

योगेश बाली ने सुझाव दिया कि हम लोग घर–घर जाकर मोहयालों से मिले, केवल कार्यवाही बैठक तक न रहे सभा की सदस्यता बढ़े। धर्मेन्द्र मेहता व मनोज बाली ने कहा बच्चों की परीक्षाऐं नजदीक हैं उनके पेपर खत्म के उपरान्त बैसाखी की धूमधाम कार्यक्रम रखा जाए। मुकेश दत्ता व गुरदीप दत्ता ने सयुंक्त रूप से कहा सभी से सुझाव लेकर कार्यक्रम हो, बजट का रुप तैयार किया जाए।

रवि बक्शी ने मोहयाल परिवारों के विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए कहा वह लगन से परीक्षा दे वह अच्छे अंक प्राप्त करें। इसके अलावा जीएमएस से अनुरोध किया मोहयाल मित्र की व्यवस्था की और ध्यान दे समय पर नहीं पहुँच रहा कभी–कभी पहुँचता नहीं है। मोहयाल प्रार्थना के साथ सभा समाप्त हुई। सभी सदस्यों ने विशेष रूप से सुरेन्द्र दत्ता व श्रीमती राजरानी दत्ता का जलपान के लिए धन्यवाद दिया।

अगली मीटिंग सभा के जुझारू सदस्य व भाजपा नेता धर्मेन्द्र मेहता के निवास मक्खन कालोनी में 28 फरवरी को होगी।

अनिल बक्शी, *प्रधान* ***रवि बक्शी,*** *महासचिव*
मो.: 9319318690 *मो. 9897645347*

होशियारपुर

आज दिनांक 6.03.2016 को मोहयाल सभा होशियारपुर की मासिक बैठक प्रधान श्री दिनेश दत्ता जी की अध्यक्षता में मोहयाल भवन ऊना रोड पर हुई। उन्होंने कहा कि आज सभा के पास फंड की कमी है तथा हम सभी को इकट्ठे होकर सभी मोहयालों को एक करके फंडस को इकट्ठा किया जाए। पी.पी मोहन जी ने कहा कि एन.आर.आई मोहयालों से भी संपर्क किया जाए, ताकि सभा का कार्य सुचारू रूप से चल सके। जिस भी मोहयाल के घर पर जन्मदिवस या कोई अन्य खुशी का अवसर हो तो वे सभा को अवश्य दान दें। धन्यवाद! ***विजयंत बाली*** *(मो.) 9417790090*

प्रेमनगर–देहरादून

मोहयाल सभा प्रेमनगर की बैठक 31.01.2016 को श्री डी.एन. दत्ता प्रधान की अध्यक्षता में उन्हीं के निवास स्थान पर 22 सदस्यों ने भाग लिया। मोहयाल प्रार्थना के पश्चात सभा की कार्यवाही आरम्भ की गई। सचिव ने गत माह कार्यवाही पढ़कर सुनाई तथा श्री जे.एस. दत्ता जी ने आय–व्यय का लेखा–जोखा प्रस्तुत किया सभी ने इसका अनुमोदन किया।

For courses in MERIT, visit: http://www.meritlogics.com

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

शोक समाचारः स्व. श्री ललित मोहन भ्राता श्री राजेश मोहन, स्व. सतपाल वशिष्ठ पिता ले.कर्नल हिमांशु वशिष्ठ एवम् स्व. प्रो. जे.एस. बाली जी के निधन पर दो मिनट का मौन रखकर भावभीनी श्रद्धांजलि दी गई।

सभा के नये सदस्य मेहता वेद प्रकाश मोहन जोहड़ी गाँव, अनारवाला, देहरादून निवासी तथा श्री अशोक बाली पोंटा साहिब से प्रेमनगर देहरादून आने पर स्वागत किया तथा श्री अशोक बाली ने सभा को 501 रुपए भेंट किए एवं श्री वेद प्रकाश मोहन जी ने सभा की सदस्यता ग्रहण की। श्री डी.एन. दत्ता जी ने सभा को 500 रु. भेंट स्वरूप दिए। प्रो. कमल रतन वैद जी ने अपने पूज्य पिता स्व. श्री बख्शी केवल कृष्ण वैद की 15वीं पुण्य–तिथि पर सभा को 500 रुपए भेंट किए।

उपस्थित सदस्यों ने ''मोहयाल मित्र'' पत्रिका के लिए एवं प्रेमनगर सभा की वार्षिक सदस्यता शुल्क कोषाध्यक्ष को जमा करवा दिया।

सभा के अन्त में श्रीमती एवं श्री डी.एन. दत्ता स्वादिष्ट भोजन एवं जलपान की व्यवस्था करने पर सभा की ओर से धन्यवाद दिया गया। सभा की अगली मीटिंग श्री भूपेन्द्र दत्ता के निवास स्थान–लक्ष्मी रोड, देहरादून में 28.02.2016 को होगी।

■ मोहयाल सभा प्रेमनगर की बैठक और सत्संग 28 फरवरी 2016 को श्री डी.एन. दत्ता, प्रधान की अध्क्षता में श्री भूपेन्दर दत्ता जी के निवास स्थान पर 35 सदस्यों ने भाग लिया। मोहयाल प्रार्थना के उपरान्त बैठक की कार्यवाही आरम्भ की गई। सर्वप्रथम राजेन्द्र नगर, देहरादून निवासी श्री जे.के. दत्ता के निधन पर दो मिनट का मौन रखकर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दी गई, तत्पश्चात माह की कार्यवाही पढ़कर सुनाई गई तथा आय–व्यय का लेखा जोखा प्रस्तुत किया गया, सभी ने इसका अनुमोदन किया।

इस बैठक में युवक–युवतियों की अच्छी भागीदारी पर सचिव तथा प्रधान महोदय ने प्रसन्नता व्यक्त की। प्रो. कमल रत्न वैद जी ने अभिभाषण में कहा कि जीएमएस को युवक–युवतियों के आलेखों/कविताओं को मोहयाल मित्र पत्रिका में प्राथमिकता से प्रकाशित करना चाहिए, ताकि युवा सदस्यों का उत्साह बढ़े। सभा के दौरान श्री डी.एन दत्ता, श्री एन.के. दत्ता, श्री एस.के. छिब्बर, श्री पुनीत दत्ता, श्री तरूण मोहन, श्री वेद प्रकाश मोहन, श्री भूपेन्दर दत्ता एवं श्रीमती नूतन वशिष्ठ जी ने अपने–अपने विचार रखें एवं मोहयाली एकता तथा अपनी सभा के आर्थिक एवं शारीरिक रूप से निर्बल वर्ग के सदस्यों की सहायता प्रदान करने पर बल दिया। शहर से आए श्री शैल कुमार दत्ता एवं सुनील कुमार दत्त ने भी बैठक में भाग लिया, श्री भूपेन्दर कुमार दत्ता जी अपने सुपुत्र श्री दिनेश कुमार दत्ता तथा पुत्र–वधु श्रीमती रजनी दत्ता जी के विवाह की वर्षगांठ के शुभअवसर पर सभा को 501 रुपए भेंट किए। डॉ. कुलदीप दत्ता जी ने अपनी स्व. माताजी श्रीमती कृष्णा दत्ता जी की पावन स्मृति में सभा को 6000 रुपए विधवा कोष में भेंट किए।

प्रेमनगर से देहरादून लक्ष्मी रोड, आने–जाने के लिए बस सेवा उपलब्ध कराने के लिए श्री रमेश दत्ता जी को सभा की ओर से धन्यवाद दिया गया।

भजन कीर्तनः बैठक के पश्चात मेजबान परिवार की ओर से भव्य भजन–कीर्तन का विशेष आयोजन किया गया, जिसमें श्रीमती नीरू छिब्बर, श्रीमती नूतन वशिष्ठ, श्रीमती प्रवेश दत्ता, श्रीमती ललिता दत्ता, श्रीमती कविता दत्ता, श्रीमती पूजा दत्ता, गायत्री दत्ता तथा श्रीमती एवं श्री पुनीत दत्ता जी ने अपने मधुर स्वरों में भजन गाकर वातावरण को भक्तिमय कर दिया, जिससे भाव–विभोर होकर अधिकांश भक्तजन झूमने–नाचने लगे। आरती–गान एवं प्रसाद वितरण के पश्चात मेजबान परिवार की ओर से जलपान की व्यवस्था की गई।

सभा के अंत में श्रीमती ललिता दत्ता एवं श्री भूपेन्दर दत्ता जी द्वारा स्वादिष्ट भोजन एवं जलपान के लिए प्रधान श्री डी.एन. दत्ता जी ने सभा की ओर से धन्यवाद दिया। सभा की अगली बैठक श्री जी. पी वशिष्ठ के निवास स्थान निकट अनुराग नर्सरी, देहरादून 27 मार्च 2016 को होगी।

राजेश बाली, *सचिव (मो.) 97588135583*

स्त्री सभा यमुनानगर

स्त्री सभा की मासिक मीटिंग श्रीमती सूरज वैद के निवास स्थान पर 6.02.2016 को हुई, सभा में सभी बहनों ने भाग लिया। सभा की अध्यक्षता श्रीमती कमला दत्ता जी ने की गायत्री मंत्र के साथ सभा की कार्यवाही शुरू हुई।

जनरल मोहयाल सभा की सचिव श्रीमती वंदना वैद के आने पर स्त्री सभा की अध्यक्ष श्रीमती कमला दत्ता जी, सचिव (श्रीमती प्रवीण बाली) और सभा की सभी बहनों ने मिलकर उनके साथ विचार–विर्मश किया, उन्होंने कहा कि स्त्री सभा यमुनानगर अच्छा कार्य कर रही है। सभी बहनों ने वंदना वैद और रायज़ादा बी.डी. बाली जी और उनकी टीम की तरफ से किए गए कार्यों को सराहा। सभा में विध वा फार्म और रिलीफ फार्म भी भरे गए।

श्रीमती कमला दत्ता जी, श्रीमती वीना वैद, श्रीमती निशा मोहन जी, श्रीमती सुरक्षा मेहता जी, श्री प्रेम दत्ता जी, श्री विजय लक्ष्मी जी, श्रीमती सुनिता दत्ता जी और श्रीमती अनिता जी ने अपने–अपने विचार रखे।

शांति पाठ के साथ सभा समाप्त हुई।

श्रीमती परवीन बाली, *सचिव फोनः 01732–226799*

बराड़ा

मोहयाल सभा बराड़ा की मासिक बैठक दिनांक 6.03.2016 को सभा के प्रधान स. हरदीप सिंह वैद जी के निवास स्थान पर मोहयाली प्रार्थना व गायत्री मंत्रोच्चारण के बाद सम्पन्न हुई, जिसमें लगभग 10 भाई–बहनों ने भाग लिया। सभा के वित्त सचिव श्री बलदेव सिंह दत्त जी ने पिछले माह की कार्यवाही पढ़कर सुनाई, जिसे सभी ने अपनी सहमति प्रकट की।

अन्त में सभी ने जलपान के लिए सभा के प्रधान स. हरदीप सिंह वैद परिवार का धन्यवाद किया।

रविन्दर कुमार छिब्बर, *सचिव मो. 09466213488*

भूल सुधार

मोहयाल मित्र मार्च मोहयाल सभा प्रेमनगर–देहरादून के शोक समाचार, पंक्ति 9, पेज 38 में एक हजार रुपये की जगह सौ रुपए लिखा गया है। कृपया 1000 रु. पढ़ें।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

नजफगढ़–नई दिल्ली

मोहयाल सभा नजफगढ़ की मासिक बैठक 6.03.2016 को प्रधान श्री शेरजंग बाली की अध्यक्षता में श्रीमती उषा बाली जी के निवास स्थान एम–86ए, न्यू रोशनपुरा, नजफगढ़, नई दिल्ली–43 में मोहयाल प्रार्थना व गायत्री मंत्रोच्चारण के साथ आरम्भ हुई, जिसमें छह भाई–बहनों न भाग लिया। सभा के सचिव श्री हर्ष दत्ता जी ने पिछले माह की कार्यवाही पढ़कर सुनाई, जिसका सब सदस्यों ने अनुमोदन किया।

ग्रैंड मैच मेकिंग मेला 20 मार्च 2016 को जीएमएस मोहयाल फाउंडेशन नई दिल्ली में होगा। रिश्ते–नाते के लिए इच्छुक परिवार इसमें हिस्सा लेकर लाभ उठाए। चर्चा के लिए खास मुद्दा न होने के कारण बैठक की समाप्ति की घोषणा की गई। अंत में सभी ने बढ़िया जलपान के लिए श्रीमती उषा बाली को धन्यवाद दिया।

अगली बैठक 3 अप्रैल 2016 को श्री रवि दत्ता के निवास स्थान आर जैड–11, गोशाला कालोनी कमला पार्क, नजफगढ़, नई दिल्ली–43 में प्रातः 10:30 बजे होगी। सभी सदस्यों से उपस्थित होने का निवेदन है।

शेरजंग बाली, *प्रधान* — *मो.: 9871756765*

हर्ष दत्ता, *सचिव* — *मो. 9312174583*

जगाधरी वर्कशाप

मोहयाल सभा की मासिक बैठक 6 मार्च 2016 को जंज घर मार्ड्न कॉलोनी आई.टी.आई में सभा के प्रधान श्री सतपाल दत्ता जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई, जिसमें लगभग 14 सदस्यों ने भाग लिया। सभा का प्रारंभ मोहयाली प्रार्थना से हुआ।

शोक समाचारः सर्वप्रथम सभा में दो मिनट का मौन रखकर श्री हरबन्स लाल जी दत्ता की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की गई। सभा श्री हरबन्स लाल जी दत्ता की आकस्मिक निधन पर शोक व्यक्त करती है तथा उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित करती है एवम् भगवान से प्रार्थना करती है कि उनके परिवार को इस असहनीय दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। इस दुःख की घड़ी में समस्त मोहयाल समाज दत्ता परिवार से सवेंदना व्यक्त करता है। आदरणीय श्री हरबन्स लाल दत्ता जी मोहयाल सभा जगाधरी वर्कशाप के उपप्रधान थे वे बड़े ही नेक दिल व सबके दुःखों में काम आने वाले इंसान थे वे धार्मिक एवं सामाजिक कार्य व मोहयाल बिरादरी के कामों में हमेशा तत्पर रहते थे। सभा एवं समस्त मोहयाल समाज उनके कार्यों को हमेशा याद रखेगें। दत्ता परिवार ने स्व. श्री हरबंस लाल दत्ता जी की स्मृति में सभा को 250 रुपए की राशी भेंट की।

सभा के सदस्यों ने अपने–अपने विचार रखे सदस्यों ने सभा की सदस्यता बढ़ाने के लिए सुझाव दिए।

सभा की अप्रैल माह की बैठक 3.04.2016 को जंज घर मार्डन कालोनी यमुनानगर में होगी। सभा का समापन गायत्री मंत्र से हुआ।

सुरेन्द्र मेहता छिब्बर, *महासचिव* — *मो.: 09355310880*

एस.पी बाली, *सचिव* — *मो. 09729530102*

पवित्र स्थान

अमृतसर गुरूओं, सन्तों, शहीदों का मनोहर सुन्दर स्थान जिसको देखकर–सुनकर ईश्वर के साक्षात दर्शन होते हैं। ऐसी भावनाऐं ऐसे स्थान के लिए मन में समा जाती है। जब ऐसे स्थान से दूर होते हैं तो मन दुआ करता है। कब अमृतसर के पवित्र स्थान के दर्शन होगें?

जिन स्थानों का अध्यात्मिक मूल्य है। उनको देखने की ललक पागलपन की हद तक को पार कर जाती है। कुछ ऐसे ख्याल मन में अमृतसर के लिए उत्पन्न होते हैं। यहाँ हर मन्दिर साहब, जलियाँवाला बाग, दुर्गआना मन्दिर प्रसिद्ध है।

यहाँ वीर योद्धा कलाकार पैदा हुए, जिनका नाम इतिहास के पन्नों पर सुनहरे अक्षरों में अंकित है। इसकी धरती के प्रति श्रद्धा और समर्पण की भावना उत्पन्न होती है। वहीं इतने सारे एक साथ बलिदान देने वाले शहीदों के लिए आँख नम, आत्मा खून के आँसू रोती है। और मन नत्मस्तिक होकर एक ही बात कहता है किः–

दुनिया की कोई धन दौलत, हीरे, मोती, जवाहरात सब ककंड़ पत्थर के समान है। दिमाग सोचता है ऐसे स्थान का प्रभाव दुनियाँ पर अपनी अमीट छाप छोड़ता है। किसी के साथ धोखा, बेईमानी, झूठ, फरेब नहीं करना, लेकिन दिमाग सोचने पर मजबूर है। ऐसे महत्वपूर्ण स्थान पर आने वाले लोग अमृतसर के लिए क्या धारणा बना कर जाते है?

जितने प्रकार के गलत काम हैं उनकी चर्म सीमा तक वृद्धि ने झकझोर कर रख दिया। व्यापार का अर्थ देखते ही देखते यह रूप धारण कर लेगा। सोच के दायरे से बाहर है। जो हो रहा है, होने दो इसका सम्बन्ध किसी से नहीं।

देख, सुन सब रहे है गलत को समाप्त करने के लिए जिम्मेदारी किसी की नहीं है।

ऐसा कोई भी सोच नहीं रख रहा है कि ऐसा क्या हो रहा है? यहाँ क्यों हो रहा है?

हो तो सब जगह रहा है लेकिन बात अमृतसर की है। उसे ऐसा ही बना रहने दे जैसा वह था, उसका नाम रोशन रहने दें। शहीदों ने इसके नाम को चार चाँद लगाए। अगर इसका प्रत्येक निवासी अपने–अपने स्वार्थ को छोड़कर हर क्षेत्र में अपना योगदान दे तो ये शहर फिर से वैसे ही जगमगाने लगेगा। इसकी गुलों सी सुगंध सी पवित्रता, गुलों सी रंगत फिर लौट आयेगी।

श्रीमती चन्द्र बाला, *गुड़गाँव (मो.) 9810216777*

राम राम दो बार क्यों?

प्रायः देखा गया है कि जब एक आदमी दूसरे आदमी से मिलता है तो राम राम दो बार कहते हैं। ऐसा क्यों? क्या कभी किसी ने एक बार या तीन बार कहा है। आइये जानें इसका रहस्य।

हिंदी की शब्दावली में 'र' सताइसवाँ वर्ण है और 'अ' की मात्रा दूसर और 'म' पच्चीसवाँ वर्ण है। यदि हम इन तीन अंकों का जोड़ करें तोः– 27+2+25 = 54 होता है। एक राम का जोड़ 54 हुआ और दो बार राम राम कहने से जोड़ 108 हो गया। माला में मनके भी 108 ही होते हैं। दो दो बार राम कहने से आपकी औद दूसरे आदमी की माला पूरी हो गई।

यह है राम राम दो बार कहने का रहस्य।

देश वैद *एफ–2/116, सेक्टर–11, रोहणी, दिल्ली फोनः 011–27570821*

For courses in MERIT, visit: http://www.meritlogics.com

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

अन्तिम यात्रा

मंगतराम मेहता का निधन

श्री मंगतराम मेहता (77) पुत्र स्व. चरनजीत लाल मेहता का निधन उनके निवास विजय विहार फेस–1, रिठाला दिल्ली के नजदीक अंबेडकर अस्पताल में 15 फरवरी 2016 को हुआ। उनकी रस्म–पगड़ी 25 फरवरी 2016 को हुई। रस्म–पगड़ी के समय मोहयाल बिरादरी व रिश्तेदार बंधुओं ने अपनी संवेदना प्रकट की।

श्री मंगत राम मेहता पाकिस्तान के जिला जेहलम के गाँव सराय नरंगाबाद से 1947 में दिल्ली के झील कुरंजा में आकर बसे। 1975 से 1990 तक यू.ए.ई. के आबू धाबी में व्यवसाय किया। उसके उपरांत दिल्ली के रिठाला में अपना निवास बनाया। श्री मंगतराम मेहता अपने पीछे अपनी धर्मपत्नी श्रीमती मीना मेहता, पुत्र राजेश मेहता–पुत्रवधू आरती मेहता, नरेश मेहता–वर्षा मेहता, मुकेश मेहता–भावना मेहता, पुत्री रतनी छिब्बर–दामाद संजय छिब्बर (मोदी नगर) तथा इनके बच्चों को छोड़ गए। रस्म पगड़ी के समय उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मीना मेहता ने जीएमएस को 500 रु. भेंट किए।–***राजेश मेहता,*** *विजय विहार, रिठाला, दिल्ली, मो. 9311788478*

श्रीमती राजरानी का स्वर्गवास

श्रीमती राजरानी पत्नी स्वर्गीय गोविन्दराम निवासी सी–53, रामदत्त एन्क्लेव उत्तमनगर, नई दिल्ली का स्वर्गवास 84 वर्ष की आयु में तिथि 17.02.2016 को हो गया। उन्होंने अपने पाँचों पुत्रों तथा दोनों पुत्रियों को परिवारिक प्यार की डोर में सदा बाँध कर रखा। (भीयाँ वेस्ट पाकिस्तान तहसील नारोवाल) गाँव में श्री लालचन्द दत्ता के घर में जन्म लेने वाली श्रीमती राजरानी को पाकिस्तान की बातें अन्त तक अच्छी तरह याद थीं तथा वे अपने गाँव तथा आस–पास के गाँवों का जिक्र अक्सर किया करती थीं। अपने पुत्र रमेश कुमार मोहन (पूर्व प्रधान उत्तम नगर मोहयाल सभा) को मोहयाल मित्र में छपने वाली पाकिस्तान की बातों को बड़े चाव से सुना करती थीं।

हमारा पूरा परिवार ईश्वर से उनकी आत्मा को शांति की प्रार्थना करता है तथा 250 रुपए जीएमएस और 250 रुपए एमएस उत्तम नगर को भेंट किए।

निखल मोहन *(पौत्र) मो. 9999917849*

सोहन सिंह बाली का निधन

मोहयाल सभा जालंधर के वरिष्ठ सदस्य 84 वर्षीय सोहन सिंह बाली सुपुत्र स्व. श्री फतेह सिंह बाली का देहांत 16 फरवरी 2016 को अचानक हृदय गति रुक जाने से हो गया। बाली जी के अंतिम संस्कार में बड़ी संख्या में सगे–संबंधी एवम् मोहयालजन उपस्थित हुए। बाली जी का जन्म जिला जेहलम पाकिस्तान में हुआ, इनकी माता का नाम उर्मिला बाली था।

विभाजन के बाद बाली परिवार जलंधर में बस गया। 1950 में मोहयाल सभा जलंधर का गठन चौ. धर्मदेव दत्ता जी ने किया, उस सभा के संस्थापक सदस्यों में एक स्व. श्री फतेह सिंह बाली जी भी थे। बाली जी को मोहयालियत अपने पिता श्री से मिली, इसी लिए वह सदैव मोहयालों में आपसी भाई–चारा बना रहे इस का चिंतन करते उन्होंने अपने बच्चों में भी मोहयाली संस्कार पैदा किए आज इनके सुपुत्र हर मोहयाल गतिविधियों में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेते हैं।

बाली जी को श्रद्धांजलि देने के लिए बड़ी संख्या में सगे संबंधी मोहयाल सभा जलंधर के प्रधान विजय दत्ता, महासचिव एस.के. दत्ता, अशोक दत्ता, सुनील दत्ता, गुलशन दत्ता, सुभाष चंद्र दत्ता, डी.के. मोहन, अश्वनी मेहता, अशोक मेहता, सुनील दत्ता, संदीप वैद, भीम सैन वैद, सुनील दत्ता (के.सी) तथा स्त्री विंग की प्रधान प्रकाशवंती दत्ता ने बाली जी को श्रद्धा–सुमन अर्पित करते हुए बाली परिवार को अपनी संवेदना प्रकट की।

रस्म–उठाला (चौथा) पर बाली परिवार ने अनेक धार्मिक, सामाजिक संस्थाओं को धनराशि भेंट की। मोहयाल सभा जलंधर को 250 रु. और जीएमएस को 250 रुपए मोहयाल मित्र फंड में भेंट किए।–***अशोक दत्ता,*** *सचिव एमएस जालंधर (मो.) 09779890717*

श्रद्धांजलि

मोहयाल सभा आगरा की संस्थापक कमेटी के एक स्तम्भ व आजीवन सचिव **स्व. कमलेश मेहता** (के.एल. मेहता) पुत्र स्व. श्री चूनीलाल मेहता, निवासी 26/1, बल्केश्वर कॉलोनी, आगरा,

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

हाल निवासी 201ए, डिफेंस कॉलोनी, दिल्ली के सालाना वरीडा कार्यक्रम दिनांक 15 फरवरी 2016 को उनके परिजनों श्रीमती आशा मेहता (पत्नी) ज्येष्ठ पुत्र श्री गौरव छिब्बर, पुत्रवधु श्रीमती रीना छिब्बर, श्री वैभव छिब्बर, पुत्रवधु कीर्ती छिब्बर, पुत्री श्रीमती रितु दत्ता दामाद श्री अजय दत्ता, पुत्र बेबे व अन्य सभी परिवारी सदस्यों जिया, कार्तिक, गौरी, सोनू आदि ने हवन, गायत्री मंत्र पाठ व शांति पाठ करके अपनी–अपनी श्रद्धांजलि दी।

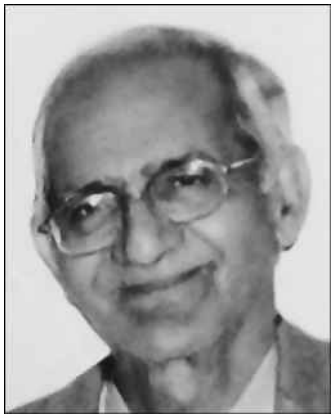

इस उपलक्ष्य पर श्रीमती आशा मेहता द्वारा मोहयाल सभा आगरा व जनरल मोहयाल सभा को 500–500 रुपए महिला उत्थान फंड में प्रदान किए, जिस पर सभा ने पूरे परिवार को धन्यवाद दिया तथा स्व. श्री मेहता जी आत्मा की शांति हेतु प्रार्थना की।

मोहयाल सभा आगरा की एक शोक सभा संरक्षक श्री कामरान दत्ता जी के निवास स्थान पर मोहयाल रत्न स्व. एस.के. छिब्बर (आई.ए.एस) व पूर्व राज्यपाल मिजोरम व संस्थापक जीएमएस के आकस्मिक निधन पर आयोजित की गई। जिसमें उनके द्वारा मोहयाल बिरादरी के लिए किए गए कार्यों की सराहना की गई व उनको याद किया गया। किस तरह से उन्होंने अपनी बिरादरी की भलाई हेतु, महिलाओं के उत्थान, बच्चों की शिक्षा व जनरल मोहयाल सभा की भूमि हेतु आदि के लिए उनके द्वारा किए गए सराहनीय कार्यों पर विचार विमर्श किया गया। उनकी सादगी, मधुर व्यवहार, मृदुभाषा को सभा सदैव याद रखेगी। शोक सभा में उपस्थित सभी सदस्यों ने दो मिनट का मौन रखकर उनको श्रद्धांजलि दी व उनकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की व गायत्री मंत्र व शांति पाठ किया गया। उनकी दिवंगत आत्मा की शांति एवं सद्गति व परिवारी जनों को इस दुःख को सहने की शक्ति प्रदान करने के लिए ईश्वर से प्रार्थना की।

एस.पी. दत्ता, *सचिव, एमएस आगरा (मो.) 9897455755*

श्रीमती शिवाली बाली की तेरहवीं पुण्य-तिथि पर श्रद्धांजलि

आज 7 अप्रैल को दीदी को हमसे जुदा हुए 13 साल गुजर गए हैं। दुनिया से अचानक यूं विदा हो जाना किसी एक अद्द शख्स का चले जाना भर नहीं है, उनका जाना एक मजूबत पाये का अचानक गायब हो जाने जैसा है, हर इंसान कुछ खास गुणों के साथ पैदा होता है, जो उसे अनूठा बना देता है।

"कच्चे नारियल की तरह रिश्ते उधड़ जाते हैं,
हर इक मोड़ पर कुछ अपने बिछुड़ जाते हैं।"

दीदी आपकी बेटी श्वेता व उसके पापा ने अपने आप को आपके बिना कैसे संभाला है वह ही जानते हैं। आज भी आप का जिक्र आने पर श्वेता की आँखें नम हो जाती है, आप होती तो उसकी समझदारी और लयाकत देखकर आपको अपनी बेटी पर नाज़ होता। उसके पापा ने आपकी कभी पूरी करने की पूरी कोशिश की हैं पर माँ तो माँ ही होती है, जिसकी कमी दुनियां में कोई पूरी नहीं कर सकता। जीजाजी आज भी वैसे ही हैं जैसा आप छोड़ कर चली गई थी आपने ज़रा भी नहीं सोचा आपसे बिछुड़ कर वो कैसे जीएगें।

"ऐ आसमां वाले कभी ज़मी पर उतर कर तो देख,
क्या होती है जुदाई कभी अपनों से बिछुड़ कर तो देख।"

दीदी आपके भतीजे विक्की की शादी पर मुझे आप की एक बात बहुत याद आई कि "भाभीजी मैं इसकी शादी पर बहुत नाचूगीं लाठी पकड़ कर ही चाहे नाचना पड़े।

जीवन के हर संघर्ष को आपने दिलेरी से स्वीकारा। आप दूसरों को हौसला देती थी कि "चिंता मत करो मैं हूं न" सच में दीदी आपके साथ गुजरा हुआ समय वह हंसी मज़ाक कभी–कभी रुला देता है। रोते हुए को हँसाने वाली हमें रोता हुआ छोड़ कर कहाँ चली गई, यदि ऐसा कोई उपाय होता तो मैं आपको भगवान से वापिस मांग लेती। आप ऊपर से भी अपना आशीर्वाद सब बच्चों पर रखना। विपिन, दीपिका और प्रियंका की शादी आपकी कमी महसूस करते हुए हो गई, आपको पता है आप तो नानी भी बन गई हैं।

अब तो आप की बेटी श्वेता की डोली में बैठने का समय आ गया है आपकी कमी कितनी खलेगी उसे बता नहीं सकती। क्या आपका मन वहाँ नहीं लग रहा था कि आपने पहले पापा जी व फिर संतोष दीदी को भी अपने पास बुला लिया। हम सब आप लोगों को हर मौके पर याद करते रहेंगे।

आपकी न भूलने वाली यादों में

आपकी भाभी–***सुनीता दत्ता***

श्रद्धांजलि

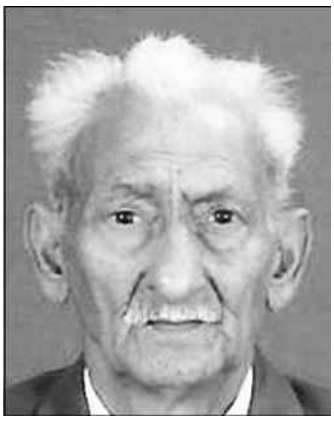

कितनी सारी बातें करनी थी आपसे पापा,
कितने सारे सवाल पूछने थे आपसे,
फिर क्यूँ इतनी जल्दी छोड़कर चले गए आप,
अभी तो आपके बिना एक महीन गुजरा है पापा,
पर फिर क्यूँ इक सदी से लंबा लगता है ये वक्त पापा।

स्व. श्री एस.के. दत्ता के परिवार ने उनकी आत्मा की शांति के लिए 250 रुपए जीएमएस में भेंट किए।

For courses in MERIT, visit: http://www.meritlogics.com

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

स्वर्गीय मैहता कुलभूषण भीमवाल की छठी पुण्य-तिथि

स्व. मैहता कुलभूषण भीमवाल सुपुत्र मेहता शिव कुमार भीमवाल व श्रीमती पुष्पा देवी भीमवाल तथा पोता स्व. मेहता नरनारायण भीमवाल एवं श्रीमती स्व. लाजवंती भीमवाल, करियाला जिला जेहलम (पं. पाक) का जन्म बूडिया गाँव, जिला अंबाला, तहसील जगाधरी में दिनांक 7.07.1948 को हुआ, तथा इनका निधन दिनांक 1.01.2010 को श्रीगंगानगर (राज.) में हुआ।

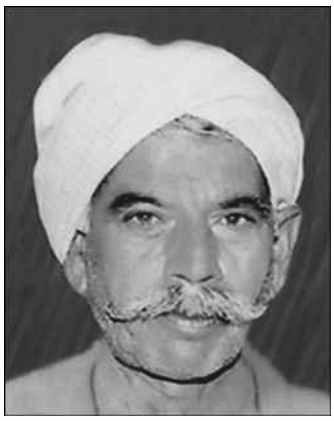

स्व. मेहता कुलभूषण भीमवाल जी की छठी पुण्यतिथि उनके निवास स्थान मु.पो. सिरदारपुरा जीवन, त. सादुलशहिर, जिला श्रीगंगानगर (राज.) में मनाई गई। घर में हवन व कीर्तन करवाया, ब्राह्मण भोज भी करवाया। भीमवाल परिवार व मित्रगण उपस्थित थे। इस अवसर पर स्व. मेहता कुलभूषण भीमवाल जी के पिता मैहता शिवकुमार भीमवाल जी ने अपने गाँव की गऊशाला में एक ट्राली हरा चारा भेंट किया, तथा जीएमएस के एजूकेशन फण्ड के लिए 500 रुपए दान दिए।

मैहता विश्वामित्र भीमवाल, *(छोटे चाचाजी) प्रधान मो.स. अबोहर मो. 9780160085*

श्रद्धांजलि

6 मार्च को दूसरी बरसी पर **श्रीमती कमला देवी** धर्म पत्नी स्व. श्री कृष्णलाल बाली जी 1470, माड्रन कालोनी, यमुनानगर को समस्त परिवार की ओर से भावभीनी श्रद्धांजलि। परिवार की तरफ से माताजी की मधुर स्मृतियों में 500 रुपए जी.एम.एस को भेंट किए।—***सूरेन्द्र मेहता छिब्बर,***
महासचिव मो.स. यमुनानगर मो. 09355310880

स्वर्गीय भाई अमरनाथ छिब्बर की दूसरी पुण्य-तिथि

दिनाँक 5.03.2016 को आपकी दूसरी बरसी है। परिवार में आपकी स्मृतियां हमेशा—हमेशा बनी हुई हैं। आपके दिखाये मार्ग पर सभी परिवार के सदस्य चल रहे हैं। आपकी परिकल्पना को साकार करने में बच्चे हमेशा प्रयत्नशील हैं। कठिन समय में भी आपका ध्यान करने पर मार्ग सुगम हो जाता है। सादा जीवन एवं उच्च परिवार की धारणा अब भी परिवार के जहन में है। आकपा खाली स्थान कोई भी नहीं भर सकता। यादें हमेशा जीवन्त है। ऐसा प्रतीत होता है कि आप आस—पास ही हैं। आप अक्सर कहा करते थे—

आदमी का ज़िस्म क्या है?
जिस पर शाइंदा है जहां,
एक मिट्टी की है मूरत,
एक मिट्टी का मकान,
मौत की पुरजोर आँधी,
जब इसे टकराएगी,
देख लेना यह इमाश्त,
टूट कर गिर जायेगी।

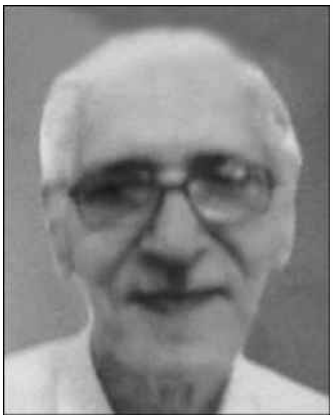

हार्दिक श्रद्धांजलि सहित परिवार 500 रुपए जीएमएस को भेंट कर रहे हैं।-***निर्मला छिब्बर*** *(पत्नी) एवं पुत्र गण, लखीमपुर खीरी (उ.प्र.) मो. 9451809356*

गलती को मानना अच्छा गुण

जो मालिक के आगे झुकते हैं वो सभी को अच्छे लगते हैं।
जो सभी के आगे झुके वो मालिक को अच्छे लगते हैं।।

ये पंक्तियां उन लोगों के लिए ठीक है, जिनको जीवन में गलती हो जाती है तो उसे स्वीकार कर लेते है। गलती हो जाती है तो उसे स्वीकार कर लेते हैं। गलती प्रत्येक इन्सान से होती है। हमें गलतियों को सुधारना चाहिए। यदि हम झुक जाएंगे तो दूसरे व्यक्तियों को अच्छी लगेगी और उन्हें भी गलती सुधारने का मौका मिलेगा। क्योंकि कहते भी है कि 'जिस वृक्ष पर फल अधिक होते हैं, वहीं झुकता है।'

अर्थात जिस व्यक्ति में अच्छे गुण होते हैं, वह झुक जाता है। कुछ व्यक्ति यह सोचते हैं कि यदि हम अपनी गलती स्वीकार कर ले तो दूसरे व्यक्ति हम पर हंसेंगे। परन्तु आज की छोटी सी गलती कल बड़ी गलती भी बन सकती है। अतः हमें अपनी छोटी—छोटी गलतियों को सुधारना चाहिए। कुछ व्यक्तियों में घमंड बहुत होता है। अपनी अक्कड़ के मारे वे गलतियों को नहीं मानते हैं।

झुकता वही है जिसमें जान होती है।
अक्कड़ तो मुरदों की पहचान होती है।।

इंसान बुरा तब बनता है, जब वह खुद को दूसरों से ज्यादा अच्छा समझने लगता है। अतः हमें अपने आप को दूसरों से अच्छा नहीं समझना चाहिए। और अपनी गलती को मानकर उन्हें सुधारना चाहिए। विनम्रत ही मनुष्य को महान बनाती है। गाँधी जी ने भी कहा था गलती करना मनुष्य का स्वभाव है, की हुई गलती को मान लेना और ऐसा आयरण रखना कि गलती फिर से न हो पाये, मर्दानगी है।

रवि बख्शी, *बी 6/46, पटेल नगर, सहारनपुर (उ.प्र.)*

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

अनमोल धन हैं बेटियाँ

बेटों से ज्यादा माँ–बाप का ख्याल रखती हैं बेटियाँ,
फिर भी बेटों की चाहत में भ्रूण हत्या की शिकार होती हैं बेटियां।

आज बेटियों ने ऐसे–ऐसे कमाल किए हैं,
जो बेटे न कर सके वो धमाल किए हैं।

चाहे माँ बाप की अर्थी को देना कंधा,
चाहे हो मुख अग्नी देने का फंदा।

बखूबी निभाती है, फिर भी घर के चिराग (बेटे) वास्ते नकारी जाती हैं।

कल्पना चावला, सुनीता विलियम ने आकाश में परचम लहराया है।
इन्ही देश की बेटियों ने, हिन्दोस्तान का नाम चमकाया है।

बेटों की एक अदद नजर होती है, माँ बाप की जायदाद पर,
कब रुखसत हो माँ बाप इस दुनियां से, हासिल हो जायदाद का हिस्सा।

अफसोस होता है, यह सब जान कर कि क्या यही है, इन्सानियत का किस्सा।
मालुम है, सबके साथ कुछ नहीं जाता, फिर इन्सान बाज कहां आता है।

आओ आज संकल्प करें, बेटे बेटियों में न फर्क करें।
बेटों को भी जन्म देती हैं, बेटियां जरा तर्क करें।

हमारी संस्कृति की शान बान हैं बेटियाँ।
माँ–बाप के प्राणों की जान हैं बेटियाँ।

सराशः– बेटियों के जन्म पर, दिल से उन्हें स्वीकार करो,
बेटों की तरह ही, बेटियों का आदर सत्कार व प्यार करो।

नरेन्द्र बाली, *जयपुर (मो.) 9166422820*

कोई करे शिकायत किस से

बंगले ही बंगले हैं इस शहर पुराने में,
ऐसे भी कितने हैं जो वीरान पड़े हैं,
उजड़े इन बंगलों का अब तो,
वारिस नहीं बचा है कोई,
जब कि पनप रहा है जीवन,
पास खड़ी झोपड़ियों में।

कोई करे शिकायत किस से,
रिश्ते बड़े नहीं हैं धन से,
सगे बन्धु भी बिना हिचक के,
गोली से बातें करते हैं,
किस के लिये किया जाये गम,
खोने को जब पास नहीं कुछ,
मुझ को मेरी फकीरी प्यारी,
जिसे लिये मैं संग चला।

पूरनचंद बाली 'नमन'
मो. 7045208241

गीता-सार

- क्यों व्यर्थ में चिन्ता करते हो? किससे व्यर्थ डरते हो? कौन तुम्हें मार सकता है? आत्मा न पैदा होती है, न मरती है।
- जो हुआ, वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है, वह अच्छा हो रहा है। जो होगा, वह भी अच्छा ही होगा। तुम भूत का पश्चाताप न करो। भविष्य की चिन्ता न करो। वर्तमान चल रहा है।
- तुम्हारा क्या गया, जो तुम रोते हो? तुम क्या लाये थे, जो तुमने खो दिया? खाली हाथ आए, खाली हाथ चले गए। जो आज तुम्हारा है, कल किसी और का था, परसों किसी और का होगा। तुम इसे अपना समझकर खुश हो रहे हो। बस यही तुम्हारे दुःखों का कारण है।
- परिवर्तन ही संसार का नियम है। मेरा–तेरा, छोटा–बड़ा, अपना–पराया मन से मिटा दो, विचार से हटा दो, अब तुम सबके हो।
- न यह शरीर तुम्हारा है, न तुम शरीर के हो। यह अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी, आकाश से बना है और इसी में मिल जायेगा। परन्तु आत्मा स्थिर है, तुम अपने आपको भगवान को अर्पित करो। यही सहारा है। जो इस सहारे को जानता है, वह भय, चिन्ता शोक से सर्वदा मुक्त हो जाता है। सब कुछ भगवान को अर्पण कर, तो तू जीवन मुक्त हो जाएगा।

।। मोहयाल प्रार्थना ।।

ऊँ स्वस्ति। ऊँ परम पिता परमात्मा को हमारा प्रेमपूर्वक नमस्कार। ऊँ स्वस्ति। सभी सुखी हों। सब का कल्याण हो। सबका आपस में प्रेम हो। सब मिलकर अपने समाज की भलाई का विचार करें। सब उसी में अपना भला समझें जिसमें सबका भला हो, हित हो, लाभ हो। मन, वचन और कर्म से कोई दूसरे की हानि न करे। हम एक दूसरे के प्रति प्रेम भाव रखों। दूसरों की बातों को धैर्य और शांतिपूर्वक सुनें। अपनी बातें मधुर शब्दों में कहें। हम निःस्वार्थ भाव से अपने समाज की भलाई के लिए कार्य करें।

जय मोहयाल

For courses in MERIT, visit: http://www.meritlogics.com

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

दधीची

भारतीय समाज में दान का बहुत महत्व है यह जरूरी नहीं की दान केवल धन से ही किया जाता है दान में समय और श्रम का भी बहुत महत्व है प्राचीन समय में दधीची ने अपनी मेरुदण्ड (हड्डीयों) का दान इसलिए किया कि उससे ब्रह्म शास्त्र बन सके।

इसी महान परम्परा को आगे बढ़ाते हुए यमुनानगर के दधीची श्री कृष्ण गोपाल दत्ता जी ने लगभग 4 साल पूर्व अपनी देह को दान करने का निर्णय लिया। जिसे कार्यान्वित करते हुए दत्ता परिवार ने उनकी मृत्यु के पश्चात् उनकी पार्थिव देह बहिन प्रवीणलता जी और निष्काम सेवक श्री जे.के. धमीजा जी के सहयोग से पीजीआई चंडीगढ़ में दान कर दी गई। श्री कृष्ण गोपाल दत्ता जी का जन्म 2.4.1932 को श्री रघुनाथ दत्ता तथा माता सुमित्रा दत्ता जी के यहाँ भाराकऊ रावलपिंडी में हुआ। विभाजन के पश्चात दत्ता परिवार रादौर (यमुना नगर) में आकर बस गया। आपकी शिक्षा शाहबाद मारकण्डा में हुई। शाहबाद मारकण्डा से आप संघ के संपर्क में आए तथा जीवन पर्यन्त इसी विचारधारा को न केवल अपनाया और दूसरों को भी प्रेरित किया। संघ की विभिन्न जिम्मेदारियों को निभाते हुए जो भी जिम्मेदारी सौंपी गई, उसे तहदिल से अपनाया आपने रादौर में कई सेवा प्राकल्पो को शुरू किया। जिनमें सिलाई केन्द्र तथा एकल विद्धालय मुख्य रूप से थे।

2003 में आप रादौर से यमुनानगर में आकर रहने लगे। यमुनानगर में आपने सेवा भारती संगठन को अपना पूरा समय दिया। आपने समाज सेवों की पूरी टीम तैयार की जो सुबह हर रोज़ सुबह सरकारी अस्पताल में मरीजों को दूध–चाय तथा फल वितरित करते हैं। यह सेवा पिछले 15 सालों से चालू है। इसमें एक दिन भी नागा नहीं पड़ा। इस सेवा कार्य के अतिरिक्त आप खून दान और नेत्र दान से भी लोगों को प्रेरित किया तथा अपनी पत्नी के देहान्त के पश्चात उनका भी नेत्र दान किए और एक पूरा गाँव ने भी नेत्र दान को अपनाया तथा देह दान करके आपने समाज को एक नई दिशा दी। आप अपने पीछे पुत्रवधू स्नेह दत्ता तथा पौत्र गुलमहक दत्ता और कुबेर दत्ता को छोड़ गए तथा सभी संघ द्वारा शिक्षित है। जिन्होंने यह संकल्प लिया है कि देह दान की इस परम्परा को सारा परिवार अपनाएगा तथा समाजसेवा की इस अविरल धारा को चालू रखेंगे। दत्त परिवार ने (चौथा) रस्म को सरकारी अस्पताल में वृक्ष रोपण करके एक नई परम्परा को चालू किया।

आपने अपनी सभी बहिनों की शादी मोहयाल परिवारों में की पुत्र पवन दत्ता जलंधर के बक्शी बतराम भिमवाल तथा पुत्री ज्योति (डॉली) की शादी कोट कपूरा पंजाब के छिब्बर परिवार में किया। आप सदैव समाज के साथ साथ मोहयाल समाज के लिए भी चिंतन करते थे 'ईइ मम' की भावना से प्रेरित दत्ता जी ने अपनी देह भी समाज को सौंप दी।

हिन्दोसतां हमारा

लेखक–डॉ. कंवलकृष्ण बाली

दुनिया में इक वतन है हिन्दोस्तां हमारा।
ये है मकां हमारा, ये है जहां हमारा।।

मौसिम यहां पै आकर करते हैं रंगकारी।
सजता है जिस के रुख पर ये गुलिस्तां हमारा।।

तबदीलियों के रह रो, हम इरतिका के हमदम।
खिलता है रोज़ इस में, ज़ोक–र'वां हमारा।।

हैं नाम से तमद्दुन, पहचान से तगैयुर।
सदियों का सिलसिला है, नाम–ओ–निशां हमारा।।

हालात की खबर पर देते है हम गवाही।
ठहरा नहीं कहीं पर कोई ज़मां हमारा।।

रस्ता है इम्तिहां का, राही हैं हम–वतन सब।
ता ज़िन्दगी चलेगा ये कार'वां हमारा।।

तहलील–ए–ज़िंदगी की है हमदनी मुयस्सर।
तनक़ीद का रवैया है पासबां हमारा।।

उल्फ़त की लहर बनकर चलता है हर बशर यां।
दयां दिली का लहरा, है महरबां हमारा।।

दुनिया की अक़िबत है, आज़ाद फ़िक्र–ओ–फ़न में।
है रहनुमाए दोरां, हिन्दोस्तां हमारा।।

प्रस्तुति–अ.ना. दत्ता

संगम

अग्नी ने इक दिन पानी से पूछा,
मैं रहती हूँ तुझ में तू रहता कहाँ हैं।

मैं जाती हूँ ऊपर तू नीचे रवां हैं,
मेरा–तेरा संगम फिर कैसे हुआ यहाँ है।

पानी ने कहा सुन अग्नी रानी,
मेरे दिल के अन्दर इक तेरा मकां हैं।

उस मकां के अन्दर लिखी इक दास्तां हैं
तू सूरज की बेटी, मैं धरती का बेटा,
तेरे मेरे संगम से पैदा हुआ ये जहाँ हैं।

देखों आँखों के अन्दर सूरज चमकता,
आँखों के अन्दर ही सागर महाँ हैं,
स्वभाव में "बक्शी" ये दोनों अलग–अलग
दुनियां बनाने में रिश्ता समां है।।

वजीरचन्द बक्शी

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

मोहयाल मोहयालियत और इतिहास-4

पूर्व कथा–सीरिया, इराक, मिस्र, ईरान आदि देशों को सुगमता और तीव्रता से जीत कर अरबों ने दक्षिण अफगानिस्तान के मार्ग से भारत की ओर बढ़ने के लिए एक भारी सेना भेजी (698 ई.) बड़ी निपुणता से जाबुल (दक्षिण–पश्चिमी अफ़गानिस्तान) के क्षत्री हिन्दू राजा ने उनको पहाड़ी घाटियों में घेर कर ध्वस्त कर दिया। उसके पश्चात् किसी अरब सेना ने अफ़गानिस्तान पर आक्रमण करने का साहस नहीं किया। यह अरबों की विजयी सेना की पहली और अपकीर्ति पूर्ण पराजय थी। 870 ई. तक जाबुल पर हिन्दू राज्य रहा। उसके पश्चात 1000 ई तक हमारे दत्त और वैद मोहयालों के पूर्वज, पूर्वी अफगानिस्तान (काबुल) और पंजाब पर, सामरिक महत्व के दर्रा खैबर के दोनों ओर राज करते रहे।

भारत पहला देश था जिसने अरबों की "अजेय शस्त्र शक्ति" को रोका। 698 ई. की इस हार से हताश होकर उन्होंने ने भारत के दूसरे सीमावर्ती क्षेत्र–सिंध पर अपनी गतिविधियाँ तेज कर दीं। अरब 636 से 700 ई. के बीच सिंध पर लगभग बारह आक्रमण कर चुके थे। अब उन्होंने देबाल (देवालय–देवाल–देबाल) को लक्ष्य बनाया क्योंकि वहाँ जल तथा थल दोनों मार्गों से सेना भेजी जा सकती थी।

उबैदुल्लाह बिन नाभन को देबाल भेजा गया परन्तु सभी मुस्लिम आक्रमणकारी मार दिए गए। उसके पश्चात बुदैल के नेतृत्व में एक बड़ी सेना ओमान से देबाल भेजी गई। सूचना मिलने पर राजा डाहर ने शीघ्रता से 4000 सैनिक ऊंटों और घोड़ों पर सवार, अपने बड़े बेटे जय सिंह के साथ भेजे। देबाल में घमासान युद्ध हुआ, बुदैल मारा गया और बहुत से मुस्लिम बंदी बना लिए गए।

यह राजा डाहर कौन था? उसका राजवंश कब से सिंध पर राज कर रहा था? और इस संघर्ष का अंत क्या हुआ?

मोहयाल इतिहास (*गुलशने मोहयाली*) के अनुसार छिब्बर जाति के एक पूर्वज नरसिंह देव, मथुरा में एक प्रतिष्ठित पद पर आसीन थे। हालात बिगड़ने पर उनका परिवार एक कारवां के साथ सिंध की राजधानी अलोर पहुँचा। नरसिंह देव के दो बेटे थे– छाज और चन्द्र। इससे आगे का सब वृत्तांत मुस्लिम इतिहासकारों द्वारा लिखित *चचनामा* पुस्तक से है जो उस समय के सिंध के इतिहास का मुख्य स्रोत है। छाजको सिंह राज्य के मंत्री के कार्यालय में नौकरी मिल गई और उसके कार्यकौशल से प्रसन्न होकर मंत्री के निधन पर उसे मंत्री (वज़ीर) नियुक्त कर दिया गया। लंबी बीमारी के पश्चात राजा का भी स्वर्गवास हो गया और उसकी रानी 'सुहंदी' को चिंता हुई कि उसके पति के भाई सिंध राज्य पर अधिकार जमा लेंगे। भाग्य लक्ष्मी के आशीर्वाद और रानी सुहंदी की चाल से 632 ई. में छाज, सिंध के सिंहासन पर सुशोभित कर दिए गए और मंत्रीगण द्वारा रानी सुहंदी से उनका विवाह कर दिया गया।

मंत्री के पद के समान ही छाज ने राज्योचित दायित्व भी सुचारू रूप से निभाया। कश्मीर से लेकर ईरान तक अपनी सीमायें सुनिश्चित की और राज्य के हर क्षेत्र में अपने अधीनस्थ गवर्नर, सामंत आदि नियुक्त किए। छाज ने 40 वर्ष तक राज किया। उसके पश्चात आठ वर्ष (671–679 ई) उसके भाई चन्द्र ने राज किया। 679 ई. में छाज का बेटा डाहर अभिषक्त हुआ। उसके लंबे शासन में भी शांति और समृद्धि का वर्चस्व रहा। जैसे कि बताया जा चुका है, अफ़गानिस्तान में पराजय से हताश होकर अरब खलीफ़ा की ओर से सिंध पर दो आक्रमण किए गए जो असफल रहे। दूसरे आक्रमण में बुदैल का वध हो जाने का इराक के गवर्नर–हज्जाज को बहुत दुख हुआ। उसने अपने पूरे संसाधन जुटा कर एक भारी सेना प्रचुर युद्ध सामग्री से लैस करके जल और थल के मार्ग से 712 ई. में देबाल भेजी।

जय सिंह ने मकरान की ओर से आ रही अरब सेना की सूचना अपने पिता राजा डाहर को दी और देबाल जाकर युद्ध करने की आज्ञा मांगी पर उसे मना कर दिया गया। जल और थल मार्गों से आ रही सेना और युद्ध यंत्र देबाल पहुँच गए तो युद्ध आरम्भ हो गया। वहाँ का दुर्ग जीत लिया। जनता की क्षमा याचना पर भी किसी पर दया नहीं की गई और अरब सैनिक तीन दिन तक नरसंहार करते रहे। स्त्रियों समेत सब को दास बना लिया गया। अरब पद्धति के अनुसार पांचवां भाग खलीफा के लिए भेज कर शेष सैनिकों में बाँट दिया। समुद्र तट से अरब सेना आगे बढ़ी। देश के इस भाग में जनता और राजा डाहर के कुछ अधीनस्थ शासक बौद्ध थे। उन्होंने पहले ही खलीफा से सांठ–गांठ की हुई थी। नेरून, स्विस्तान और ससन के दुर्ग सुगमता से अरबों को मिल गए।

कुछ समय पहले ही अरब आक्रमणकारी दो बार हार चुके थे और राजा डाहर का मनोबल बहुत ऊंचा था, पर उसने इस समय की सामरिक स्थिति को शायद ठीक से नहीं समझा। अरब सेना 50 दिन तक रावड़ दुर्ग के समीप राजा डाहर की सेना के सामने, नदी के पार, खड़ी रही पर युद्ध करने का साहस नहीं हुआ। उनमें खाने की कमी और बीमारी फैलने पर भी राजा डाहर ने आक्रमण करके लाभ उठाना मर्यादा संगत नहीं समझा।

अंतः घमासान युद्ध हुआ, राजा डाहर एक हाथी पर बैठ कर अपनी सेना का नेतृत्व करता हुआ बड़ी वीरता से लड़ा जब कि एक समय अरब सैनिक तथा उनको सेनानायक त्रस्त थे (इस प्रकार का वर्णन चचनामा में है)। एक आग के गोले से डाहर के हाथी के हौदे में आग लग गई और उस हलचल में उसका वध हो गया।

इसके बाद का इतिहास बड़ा विचित्र है। देश के राजा के निधन और पराजय के पश्चात प्रायः संघर्ष समाप्त हो जाता है। परन्तु अरब सेना को अब पहले से भी अधिक कठिनाई हुई। ब्राह्मनाबाद का दुर्ग जयसिंह के पास था। वहां अरब सेना छह महीने तक घेरा डाल कर युद्ध करती रही। इस बीच जयसिंह जयपुर और कश्मीर सहायता के लिए गया परन्तु सफल नहीं हुआ। राजधानी अलोर का दुर्ग डाहर के दूसरे बेटे के नियंत्रण में था। इसी प्रकार अस्कलंदा, सिक्का और मुलतान के दुर्ग जीतने में अरब सेना को कड़े प्रतिरोध और खाद्य सामग्री की कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

जय सिंह पत्रों द्वारा बाकी राजकुमारों के संपर्क में रहा जो अन्य दुर्ग के गवर्नर थे और उन्हें अपने निर्देश कर्त्तव्य करते रहने के लिए प्रोत्साहित करता रहा। युद्ध समाप्त हो जाने पर (जयपुर के समीप) नजूल संदल गाँव में सब भाई एकत्रित हो गए।

अरब सेनानायक मुहम्मद बिन कासिम को वापस बुला लिया गया। उसके पश्चात जयसिंह ने ब्राह्मनाबाद और अन्य कई हिन्दू सामंतों ने अपने क्षेत्र जीत लिए और अरबों को पुनः सिंध जीतना पड़ा। *चचनामा* का वृत्तांत यहाँ समाप्त करते हैं।

मुलतान से आगे पंजाब पर अरबों का नियंत्रण नहीं था। मोहयाल इतिहास के अनुसार, सिंध हाथ से निकल जाने के पश्चात डाहर के पुत्र जयसिंह ने भद्रावली (पुराना भेरा), नारायण ने पठानकोट तथा भवन और झाम ने भटनेर में अपने राज्य स्थापित कर लिए। अनुमानतः तीन कोनों पर स्थित इन तीन राजधानियों से सब भाई मिल कर पंजाब पर शासन कर रहे थे। यह राज्य छिब्बरों से वैद शासकों के हाथ कब आया इसकी कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है।

संपर्क: ***आर.टी मोहन*** *(पंचकूला) मो. 09464544728*
E-mail: rtmwrite@yahoo.co.in

 For courses in MERIT, visit: http://www.meritlogics.com

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor